

5/5

३
२५

३
२२
२२
१४
२५

९४२
९७
९२२



3
1

५०

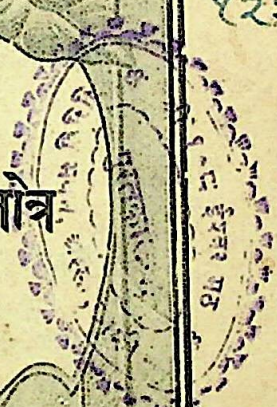
३
२६०
२२४
१२२

ॐ

श्रीविल्वमङ्गलविरचित

श्रीगोविन्ददामोदरस्तोत्र

भाषा-टीकाकार
प्रभुदत्त ब्रह्मचारी



मूल्य -)

❀ श्रीहरिः ❀
 श्रीबिल्वमङ्गलाचार्यविरचितं
 गोविन्ददामोदरस्तोत्रम्

(१)

अग्रे कुरूणामथ पाण्डवानां
 दुःशासनेनाहृतवस्त्रकेशा ।
 कृष्णा तदाक्रोशदनन्यनाथा
 गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(२)

श्रीकृष्ण विष्णो मधुकैटभारे
 भक्तानुकम्पिन् भगवन् मुरारे ।
 त्रायस्व मां केशव लोकनाथ
 गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(३)

विक्रेतुकामाखिलगोपकन्या
 मुरारिपादार्पितचित्तवृत्तिः ।
 दध्यादिकं मोहवशादवोचद्
 गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(४)

उलूखले सम्भृततण्डुलांश्च
 संघट्टयन्त्यो मुशलैः प्रमुग्धाः ।
 गायन्ति गोप्यो जनितानुरागा
 गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

- ५५ -

❁ श्रीहरिः ❁
 श्रीविल्वमङ्गलाचार्यविरचित
 गोविन्द-दामोदर-स्तोत्र

(१)

[जिस समय] कौरव और पाण्डवोंके सामने भरी सभामें दुःशासनने द्रौपदीके वस्त्र और बालोंको पकड़कर खींचा, उस समय जिसका कोई दूसरा नाथ नहीं है ऐसी द्रौपदीने रोकर पुकारा—‘हे गोविन्द ! हे दामोदर ! हे माधव !’

(२)

‘हे श्रीकृष्ण ! हे विष्णो ! हे मधुकैटभको मारनेवाले ! हे भक्तोंके ऊपर अनुकम्पा करनेवाले ! हे भगवन् ! हे मुरारे ! हे केशव ! हे लोकेश्वर ! हे गोविन्द ! हे दामोदर ! हे माधव ! मेरी रक्षा करो, रक्षा करो !’

(३)

जिनकी चित्तवृत्ति मुरारिके चरणकमलोंमें लगी हुई है, वे सभी गोपकन्याएँ दूध-दही बेचनेकी इच्छासे घरसे चलीं । उनका मन तो मुरारिके पास था; अतः प्रेमवश सुध-बुध भूल जानेके कारण ‘दही लो दही !’ इसके स्थानमें जोर-जोरसे ‘गोविन्द ! दामोदर ! माधव !’ आदि पुकारने लगीं ।

(४)

ओखलीमें धान भरे हुए हैं, उन्हें मुग्धा गोपरमणियाँ मूसलोंसे कूट रही हैं और कूटते-कूटते कृष्णप्रेममें विभोर होकर ‘गोविन्द ! दामोदर ! माधव !’ इस प्रकार गायन करती जाती हैं ।

[३]

गोविन्द-दामोदर-स्तोत्र

(५)

काचित्कराम्भोजपुटे निषण्णं
 क्रीडाशुकं किंशुकरक्ततुण्डम् ।
 अध्यापयामास सरोरुहाक्षी
 गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(६)

गृहे गृहे गोपवधूसमूहः
 प्रतिक्षणं पिञ्जरसारिकाणाम् ।
 स्खलद्गिरं वाचयितुं प्रवृत्तो
 गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(७)

पर्यङ्किकाभाजमलं कुमारं
 प्रस्थापयन्त्योऽखिलगोपकन्याः ।
 जगुः प्रबन्धं स्वरतालबन्धं
 गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(८)

रामानुजं वीक्षणकेलिलोलं
 गोपी गृहीत्वा नवनीतगोलम् ।
 आबालकं बालकमाजुहाव
 गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(९)

विचित्रवर्णाभरणाभिरामे-
 ऽभिधेहि वक्त्राम्बुजराजहंसि ।
 सदा मदीये रसनेऽग्ररङ्गे
 गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(५)

कोई कमलनयनी बाला मनोविनोदके लिये पाले हुए अपने करकमलपर बैठे किंशुककुसुमके समान रक्तवर्ण चोंचवाले सुगोको पढ़ा रही थी—पढ़ो तो तोता ! 'गोविन्द ! दामोदर ! माधव !'

(६)

प्रत्येक घरमें समूह-की-समूह गोपाङ्गनाएँ पींजरीमें पाली हुई अपनी मैनाओंसे उनकी लड़खड़ाती हुई वाणीको क्षण-क्षणमें 'हे गोविन्द ! हे दामोदर ! हे माधव !' इत्यादि रूपसे कहलानेमें लगी रहती थीं ।

(७)

पालनेमें पौढ़े हुए अपने नन्हे बच्चेको सुलाती हुई सभी गोपकन्याएँ ताल-स्वरके साथ 'गोविन्द ! दामोदर ! माधव !' इस पदको ही गाती जाती थीं ।

(८)

हाथमें माखनका गोला लेकर मैया यशोदाने आँखमिचौनीकी क्रीडामें व्यस्त बलरामके छोटे भाई कृष्णको बालकोंके बीचसे पकड़कर पुकारा—'अरे गोविन्द ! अरे दामोदर ! अरे माधव !'

(९)

विचित्र वर्णमय आभरणोंसे अत्यन्त सुन्दर प्रतीत होनेवाली हे मुखकमलकी राजहंसीरूपिणी मेरी रसने ! तू सर्वप्रथम 'गोविन्द ! दामोदर ! माधव !' इस ध्वनिका ही विस्तार कर ।

गोविन्द-दामोदर-स्तोत्र

(१०)

अङ्गाधिरूढं शिशुगोपगूढं
स्तनं धयन्तं कमलैककान्तम् ।
सम्बोधयामास मुदा यशोदा
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(११)

क्रीडन्तमन्तर्ब्रजमात्मजं स्वं
समं वयस्यैः पशुपालवालैः ।
प्रेम्णा यशोदा प्रजुहाव कृष्णं
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(१२)

यशोदया गाढमुलूखलेन
गोकण्ठपाशेन निबध्यमानः ।
रुरोद मन्दं नवनीतभोजी
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(१३)

निजाङ्गने कङ्कणकेलिलोलं
गोपी गृहीत्वा नवनीतगोलम् ।
आमर्दयत्पाणितलेन नेत्रे
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(१४)

गृहे गृहे गोपवधूकदम्बाः
सर्वे मिलित्वा समवाययोगे ।
पुण्यानि नामानि पठन्ति नित्यं
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

गोविन्द-दामोदर-स्तोत्र

(१०)

अपनी गोदमें बैठकर दूध पीते हुए बालगोपालरूपधारी भगवान् लक्ष्मीकान्तको लक्ष्य करके प्रेमानन्दमें मग्न हुई यशोदामैया इस प्रकार बुलाया करती थीं—‘ऐ मेरे गोविन्द ! ऐ मेरे दामोदर ! ऐ मेरे माधव ! ज़रा बोलो तो सही ।’

(११)

अपने समवयस्क गोपबालकोंके साथ गोष्ठमें खेलते हुए अपने प्यारे पुत्र कृष्णको यशोदामैयाने अत्यन्त स्नेहके साथ पुकारा—‘अरे ओ गोविन्द ! ओ दामोदर ! अरे माधव ! [कहाँ चला गया ?]’

(१२)

अधिक चपलता करनेके कारण यशोदामैयाने गौ बाँधनेकी रस्तीसे खूब कसकर ओखलीमें उन घनश्यामको बाँध दिया, तब तो वे माखनभोगी कृष्ण धीरे-धीरे [आँखें मलते हुए] सिसक-सिसककर ‘गोविन्द ! दामोदर ! माधव !’ कहते हुए रोने लगे ।

(१३)

श्रीनन्दनन्दन अपने ही घरके आँगनमें अपने हाथके कंकणसे खेलनेमें लगे हुए हैं, उसी समय मैयाने धीरेसे जाकर उनके दोनों कमलनयनोंको अपनी हथेलीसे मूँद लिया तथा दूसरे हाथमें नवनीत-का गोला लेकर प्रेमपूर्वक कहने लगी—‘गोविन्द ! दामोदर ! माधव ! [लो देखो, यह माखन खा लो] ।’

(१४)

ब्रजके प्रत्येक घरमें गोपाङ्गनाएँ एकत्र होनेका अवसर पानेपर झुंड-की-झुंड आपसमें मिलकर उन मनमोहन माधवके ‘गोविन्द, दामोदर, माधव’ इन पवित्र नामोंको पढ़ा करती हैं ।

गोविन्द-दामोदर-स्तोत्र

(१५)

मन्दारमूले वदनाभिरामं
विम्बाधरे पूरितवेणुनादम् ।

गोगोपगोपीजनमध्यसंस्थं

गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(१६)

उत्थाय गोप्योऽपररात्रभागे
स्मृत्वा यशोदासुतबालकेलिम् ।

गायन्ति प्रोच्यैर्दधि मन्थयन्त्यो

गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(१७)

जग्धोऽथ दत्तो नवनीतपिण्डो

गृहे यशोदा विचिकित्सयन्ती ।

उवाच सत्यं वद हे मुरारे

गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(१८)

अभ्यर्च्य गेहं युवतिः प्रवृद्ध-

प्रेमप्रवाहा दधि निर्ममन्थ ।

गायन्ति गोप्योऽथ सखीसमेता

गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

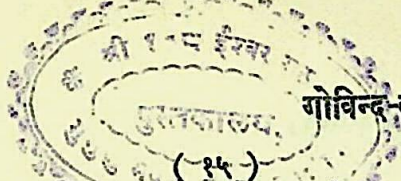
(१९)

कचित् प्रभाते दधिपूर्णपात्रे

निक्षिप्य मन्थं युवती मुकुन्दम् ।

आलोक्य गानं विविधं करोति

गोविन्द दामोदर माधवेति ॥



गोविन्द-दामोदर-स्तोत्र

(१५)

जिनका मुखारविन्द बड़ा ही मनोहर है, जो अपने विम्बके समान अरुण अधरोंपर रखकर वंशीकी मधुर ध्वनि कर रहे हैं तथा जो कदम्बके तले गौ, गोप और गोपियोंके मध्यमें विराजमान हैं उन भगवान्‌का 'हे गोविन्द ! हे दामोदर ! हे माधव !' इस प्रकार कहते हुए सदा स्मरण करना चाहिये ।

(१६)

ब्रजाङ्गनाएँ ब्राह्ममुहूर्तमें उठकर और उन यशुमतिनन्दनकी बालक्रीड़ाओंकी बातोंको याद करके दही मथते-मथते 'गोविन्द ! दामोदर ! माधव !' इन पदोंको उच्च स्वरसे गाया करती हैं ।

(१७)

[दधि मथकर माताने माखनका लौंदा रख दिया था । माखनभोगी कृष्णकी दृष्टि पड़ गयी, झट उसे धीरेसे उठा लाये]—कुछ खाया कुछ बाँट दिया । जब ढूँढ़ते-ढूँढ़ते न मिला तो यशोदामैयाने आपपर सन्देह करते हुए पूछा—'हे मुरारे ! हे गोविन्द ! हे दामोदर ! हे माधव ! ठीक-ठीक बता माखनका लौंदा क्या हुआ ?'

(१८)

जिसके हृदयमें प्रेमकी वाढ़ आ रही है ऐसी माता यशोदा घरको लीपकर दही मथने लगी । तब और सब गोपाङ्गनाएँ तथा सखियाँ मिलकर 'गोविन्द ! दामोदर ! माधव !' इस पदका गान करने लगीं ।

(१९)

किसी दिन प्रातःकाल ज्यों ही माता यशोदा दहीभरे भाण्डमें मथानीको छोड़कर उठी त्यों ही उसकी दृष्टि शय्यापर बैठे हुए मनमोहन मुकुन्दपर पड़ी । सरकारको देखते ही वह प्रेमसे पगली हो गयी और 'मेरा गोविन्द ! मेरा दामोदर ! मेरा माधव !' ऐसा कहकर तरह-तरहसे गाने लगी ।

[९]

गोविन्द-दामोदर-स्तोत्र

(२०)

क्रीडापरं भोजनमञ्जनार्थं
 हितैषिणी स्त्री तनुजं यशोदा ।
 आजूहवत् प्रेमपरिप्लुताक्षी
 गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(२१)

सुखं शयानं निलये च विष्णुं
 देवर्षिमुख्या मुनयः प्रपन्नाः ।
 तेनाच्युते तन्मयतां व्रजन्ति
 गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(२२)

विहाय निद्रामरुणोदये च
 विधाय कृत्यानि च विप्रमुख्याः ।
 वेदावसाने प्रपठन्ति नित्यं
 गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(२३)

वृन्दावने गोपगणाश्च गोप्यो
 विलोक्य गोविन्दवियोगस्त्रिभाम् ।
 राधां जगुः साश्रुविलोचनाभ्यां
 गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(२४)

प्रभातसञ्चारगता नु गाव-
 स्तदूरक्षणार्थं तनयं यशोदा ।
 प्राबोधयत् पाणितलेन मन्दं
 गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

गोविन्द-दामोदर-स्तोत्र

(२०)

क्रीडाविहारी मुरारि बालकोंके साथ खेल रहे हैं [अभीतक न खान किया है न भोजन] अतः प्रेममें विह्वल हुई माता उन्हें खान और भोजनके लिये पुकारने लगी—‘अरे ओ गोविन्द ! ओ दामोदर ! ओ माधव ! [आ बेटा ! आ ! पानी ठण्डा हो रहा है जल्दीसे नहा ले और कुछ खा ले] ।’

(२१)

नारद आदि ऋषि ‘हे गोविन्द ! हे दामोदर ! हे माधव !’ इस प्रकार प्रार्थना करते हुए घरमें सुखपूर्वक सोये हुए उन पुराण-पुरुष बालकृष्णकी शरणमें आये; अतः उन्होंने श्रीअच्युतमें तन्मयता प्राप्त कर ली ।

(२२)

वेदज्ञ ब्राह्मण प्रातःकाल उठकर और अपने नित्य-नैमित्तिक कर्मोंको पूर्णकर वेदपाठके अन्तमें नित्य ही ‘गोविन्द ! दामोदर ! माधव !’ इन मञ्जुल नामोंका कीर्तन करते हैं ।

(२३)

वृन्दावनमें श्रीवृषभानुकुमारीको वनवारीके वियोगसे विह्वल देख गोपगण और गोपियाँ अपने कमलनयनोंसे नीर बहाती हुई ‘हा गोविन्द ! हा दामोदर ! हा माधव !’ आदि कहकर पुकारने लगीं ।

(२४)

प्रातःकाल होनेपर जब गौएँ वनमें चरने चली गयीं तब उनकी रक्षाके लिये यशोदामैया शय्यापर शयन करते हुए बालकृष्णको मीठी-मीठी थपकियोंसे जगाती हुई बोलीं—‘बेटा गोविन्द ! मुन्ना माधव ! लल्लू दामोदर ! [उठ, जा गौओंको चरा ला] ।’

[११]

गोविन्द-दामोदर-स्तोत्र

(२५)

प्रबालशोभा इव दीर्घकेशा
चाताम्बुपर्णाशनपूतदेहाः ।
मूले तरूणां मुनयः पठन्ति
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(२६)

एवं ब्रुवाणा विरहातुरा भृशं
व्रजस्त्रियः कृष्णविषक्तमानसाः ।
विसृज्य लज्जां रुरुदुःस्म सुस्वरं
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(२७)

गोपी कदाचिन्मणिपिञ्जरस्थं
शुकं वचो वाचयितुं प्रवृत्ता ।
आनन्दकन्द व्रजचन्द्र कृष्ण
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(२८)

गोवत्सवालैः शिशुकाकपक्षं
बध्नन्तमम्भोजदलायताक्षम् ।
उवाच माता चिबुकं गृहीत्वा
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(२९)

प्रभातकाले वरवल्लवौघा
गोरक्षणार्थं धृतवेन्नदण्डाः ।
आकारयामासुरनन्तमाद्यं
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(२५)

केवल वायु, जल और पत्तोंके खानेसे जिनके शरीर पवित्र हो गये हैं, ऐसे प्रबालके समान शोभायमान लंबी-लंबी एवं कुछ अरुण रंगकी जटाओंवाले मुनिगण पवित्र वृक्षोंकी छायामें विराजमान होकर निरन्तर 'गोविन्द ! दामोदर ! माधव !' इन नामोंका पाठ करते हैं ।

(२६)

श्रीवनमालीके विरहमें विह्वल हुई ब्रजाङ्गनाएँ उनके विषयमें विविध प्रकारकी बातें कहती हुई लोक-लज्जाको तिलाञ्जलि दे बड़े आर्चस्वरसे 'गोविन्द ! दामोदर ! माधव !' कहकर जोर-जोरसे रोने लगीं ।

(२७)

गोपी श्रीराधिकाजी किसी दिन मणियोंके पिंजड़ेमें पले हुए तोतेसे बार-बार 'आनन्दकन्द ! ब्रजचन्द्र ! कृष्ण ! गोविन्द ! दामोदर ! माधव !' इन नामोंको बुलवाने लगीं ।

(२८)

कमलनयन श्रीकृष्णचन्द्रको किसी गोपबालककी चोटी बछड़ेकी पूँछके बालोंसे बाँधते देख मैया प्यारसे उनकी ठोड़ीको पकड़कर कहने लगीं—'मेरा गोविन्द ! मेरा दामोदर ! मेरा माधव !'

(२९)

प्रातःकाल हुआ, ग्वाल-बालोंकी मित्रमण्डली हाथोंमें वेतकी छड़ी और लाठी ले गौओंको चरानेके लिये निकली । तब वे अपने प्यारे सखा अनन्त आदिपुरुष श्रीकृष्णको गोविन्द ! दामोदर ! माधव !' कह-कहकर बुलाने लगे ।

गोविन्द-दामोदर-स्तोत्र

(३०)

जलाशये कालियमर्दनाय
यदा कदम्बादपतन्मुरारिः ।
गोपाङ्गनाश्चक्रुशुरेत्य गोपा
गोविन्द दामोदर माघवेति ॥

(३१)

अक्रूरमासाद्य यदा मुकुन्द-
 श्चापोत्सवार्थं मथुरां प्रविष्टः ।
 तदा स पौरैर्जयतीत्यभाषि
 गोविन्द दामोदर माघवेति ॥

(३२)

कंसस्य दूतेन यदैव नीतौ
वृन्दावनान्ताद् वसुदेवसूनु ।
रुरोद् गोपी भवनस्य मध्ये
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(३३)

सरोवरे कालियनागवद्धं
शिशुं यशोदातनयं निशम्य ।
चक्रुर्लुटन्त्यः पथि गोपवाला
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(३५)

अक्रूरयाने यदुवंशनाथं
संगच्छमानं मथुरां निरीक्ष्य ।
ऊचुर्वियोगात् किल गोपबाला
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

गोविन्द-दामोदर-स्तोत्र

(३०)

जिस समय कालियनागका मर्दन करनेके लिये कन्हैया कदम्बके वृक्षसे कूदे, उस समय गोपाङ्गनाएँ और गोपगण वहाँ आकर 'हा गोविन्द ! हा दामोदर ! हा माधव !' कहकर बड़े जोरसे रोने लगे ।

(३१)

जिस समय श्रीकृष्णचन्द्रने कंसके धनुर्यज्ञोत्सवमें सम्मिलित होनेके लिये अक्रूरजीके साथ मथुरामें प्रवेश किया, उस समय पुरवासीजन 'हे गोविन्द ! हे दामोदर ! हे माधव ! तुम्हारी जय हो, जय हो' ऐसा कहने लगे ।

(३२)

जब कंसके दूत अक्रूरजी वसुदेवनन्दन श्रीकृष्ण और बलरामको वृन्दावनसे दूर ले गये तब अपने घरमें बैठी हुई यशोदाजी 'हा गोविन्द ! हा दामोदर ! हा माधव !' कह-कहकर रुदन करने लगीं ।

(३३)

यशोदानन्दन बालक श्रीकृष्णको कालियहृदमें कालियनागसे जकड़ा हुआ सुनकर गोपबालाएँ रास्तेमें लोटती हुई 'हा गोविन्द ! हा दामोदर ! हा माधव !' कहकर जोरोंसे रुदन करने लगीं ।

(३४)

अक्रूरके रथपर चढ़कर मथुरा जाते हुए श्रीकृष्णको देख समस्त गोपबालाएँ वियोगके कारण अघीर होकर कहने लगीं—'हा गोविन्द ! हा दामोदर ! हा माधव ! [हमें छोड़कर तुम कहाँ जाते हो] !'

[१५

गोविन्द-दामोदर-स्तोत्र

(३५)

चक्रन्द गोपी नलिनीवनान्ते
कृष्णेन हीना कुसुमे शयाना ।
प्रफुल्लनीलोत्पललोचनाभ्यां
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(३६)

मातापितृभ्यां परिवार्यमाणा
गेहं प्रविष्टा विललाप गोपी ।
आगत्य मां पालय विश्वनाथ
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(३७)

वृन्दावनस्थं हरिमाशु बुद्ध्वा
गोपी गता कापि वनं निशायाम् ।
तत्राप्यदृष्ट्वातिभयादवोचद्
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(३८)

सुखं शयाना निलये निजेऽपि
नामानि विष्णोः प्रवदन्ति मर्त्याः ।
ते निश्चितं तन्मयतां व्रजन्ति
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(३९)

सा नीरजाक्षीमवलोक्य राधां
रुरोद गोविन्दवियोगस्त्रिभाम् ।
सखी प्रफुल्लोत्पललोचनाभ्यां
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

गोविन्द-दामोदर-स्तोत्र

(३५)

श्रीराधिकाजी श्रीकृष्णके अलग हो जानेपर कमलवनमें कुसुम-
शय्यापर सोकर अपने विकसित कमलसदृश लोचनोंसे आँसू बहाती हुई
'हा गोविन्द ! हा दामोदर ! हा माधव !' कहकर क्रन्दन करने लगीं ।

(३६)

माता-पिता आदिसे घिरी हुई श्रीराधिकाजी घरके भीतर प्रवेशकर
विलाप करने लगीं कि 'हे विश्वनाथ ! हे गोविन्द ! हे दामोदर ! हे
माधव !' तुम आकर मेरी रक्षा करो ! रक्षा करो !!

(३७)

रात्रिका समय था, किसी गोपीकी भ्रम हो गया कि वृन्दावन-
विहारी इस समय वनमें विराजमान हैं । बस, फिर क्या था, झट
उसी ओर चल दी । किन्तु जब उसने निर्जन वनमें वनमालीको
न देखा, तो डरसे काँपती हुई 'हा गोविन्द ! हा दामोदर ! हा
माधव !' कहने लगी ।

(३८)

[वनमें न भी जायँ] अपने घरमें ही सुखसे शय्यापर शयन
करते हुए भी जो लोग 'हे गोविन्द ! हे दामोदर ! हे माधव !' इन
विष्णुभगवान्‌के पवित्र नामोंको निरन्तर कहते रहते हैं वे निश्चय ही
भगवान्‌की तन्मयता प्राप्त कर लेते हैं ।

(३९)

कमललोचन राधाको श्रीगोविन्दकी विरहव्यथासे पीड़ित
देख कोई सखी अपने प्रफुल्ल कमलसदृश नयनोंसे नीर बहाती हुई 'हे
गोविन्द ! हे दामोदर ! हे माधव !' कहकर रुदन करने लगी ।

[१७]

गोविन्द-दामोदर-स्तोत्र

(४०)

जिह्वे रसज्ञे मधुरप्रिया त्वं
सत्यं हितं त्वां परमं वदामि ।

आवर्णयेथा मधुराक्षराणि
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(४१)

आत्यन्तिकव्याधिहरं जनानां
चिकित्सकं वेदविदो वदन्ति ।

संसारतापत्रयनाशबीजं
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(४२)

ताताक्षया गच्छति रामचन्द्रे
सलक्ष्मणेऽरण्यचये ससीते ।

चक्रन्द रामस्य निजा जनित्री
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥*

(४३)

एकाकिनी दण्डककाननान्तात्
सा नीयमाना दशकन्धरेण ।

सीता तदाक्रन्ददनन्यनाथा
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥*

(४४)

रामाद्वियुक्ता जनकात्मजा सा
विचिन्तयन्ती हृदि रामरूपम् ।

रुरोद सीता रघुनाथ पाहि
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥*

* अत्र 'हे राम रघुनन्दन राधवेति' इति पाठान्तरम् ।



गोविन्द-दामोदर-स्तोत्र

हे रसोंको चखनेवाली जिह्वे ! तुझे मीठी चीज बहुत अधिक प्यारी लगती है, इसलिये मैं तेरे हितकी एक बहुत ही सुन्दर और सच्ची बात बताता हूँ । तू निरन्तर 'हे गोविन्द ! हे दामोदर ! हे माधव !' इन मधुर मञ्जुल नामोंकी आवृत्ति किया कर ।

(४१)

वेदवेत्ता विद्वान् 'गोविन्द ! दामोदर ! माधव !' इन नामोंको ही लोगोंकी बड़ी-से-बड़ी विकट व्याधिको विच्छेद करनेवाला वैद्य और संसारके आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक तीनों तापोंके नाशका बढ़िया बीज बतलाते हैं ।

(४२)

अपने पिता दशरथकी आज्ञासे भाई लक्ष्मण और जनकनन्दिनी सीताके साथ श्रीरामचन्द्रजी बीहड़ वनोंके लिये चलने लगे, तब उनकी माता श्रीकौशल्याजी 'हे गोविन्द ! हे दामोदर ! हे माधव ! [हे राम ! हे रघुनन्दन ! हे राघव !]' ऐसा कहकर जोरोंसे विलाप करने लगीं ।

(४३)

जब राक्षसराज रावण पञ्चवटीमें जानकीजीको अकेली देख उन्हें हरकर ले जाने लगा, तब रामचन्द्रजीके सिवा जिनका दूसरा कोई स्वामी नहीं है ऐसी सीताजी 'हा गोविन्द ! हा दामोदर ! हा माधव ! [हे राम ! हे रघुनन्दन ! हे राघव !]' कहकर जोरोंसे रुदन करने लगीं ।

(४४)

रथमें बिठाकर ले जाते हुए रावणके साथ, रामवियोगिनी सीता हृदयमें अपने स्वामी श्रीरामचन्द्रजीका ध्यान करती हुई 'हा रघुनाथ ! हा गोविन्द ! हा दामोदर ! हा माधव ! [हे राम ! हे रघुनन्दन ! हे राघव ! मेरी रक्षा करो]' इस प्रकार रोती हुई जाने लगी ।

[१९]

गोविन्द-दामोदर-स्तोत्र

(४५)

प्रसीद विष्णो रघुवंशनाथ
सुरासुराणां सुखदुःखहेतो ।
रुरोद सीता तु समुद्रमध्ये
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥*

(४६)

अन्तर्जले ग्राह्यगृहीतपादो
विसृष्टविक्रिष्टसमस्तबन्धुः ।
तदा गजेन्द्रो नितरां जगाद
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(४७)

हंसध्वजः शङ्खयुतो ददर्श
पुत्रं कटाहे प्रतपन्तमेनम् ।
पुण्यानि नामानि हरेर्जपन्तं
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(४८)

दुर्वाससो वाक्यमुपेत्य कृष्णा
साचाब्रवीत् काननवासिनीशम् ।
अन्तःप्रविष्टं मनसाजुहाव
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(४९)

ध्येयः सदा योगिभिरप्रमेयः
चिन्ताहरश्चिन्तितपारिजातः ।
कस्तूरिकाकल्पितनीलवर्णो
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

* अत्र 'हे राम रघुनन्दन राघवेति' इति पाठान्तरम् ।

गोविन्द-दामोदर-स्तोत्र

(४५)

जब रावणके साथ सीताजी समुद्रके मध्यमें पहुँचीं तब यह कहकर जोर-जोरसे रुदन करने लगीं—‘हे विष्णो ! हे रघुकुलपते ! हे देवताओंको सुख और असुरोंको दुःख देनेवाले ! हे गोविन्द ! हे दामोदर ! हे माधव ! [हे राम ! हे रघुनन्दन ! हे राघव !] प्रसन्न होइये ; प्रसन्न होइये ।’

(४६)

पानी पीते समय जलके भीतरसे जब ग्राहने गजका पैर पकड़ लिया और उसका समस्त दुखी बन्धुओंसे साथ छूट गया तब वह गजराज अधीर होकर अनन्यभावसे निरन्तर ‘हे गोविन्द ! हे दामोदर ! हे माधव !’ ऐसे कहने लगा ।

(४७)

अपने पुरोहित शङ्खमुनिके साथ राजा हंसध्वजने अपने पुत्र सुधन्वाको तप्त तैलकी कड़ाहीमें कूदते और ‘हे गोविन्द ! हे दामोदर ! हे माधव !’ इन भगवान्‌के परम्पावन नामोंका जप करते हुए देखा ।

(४८)

[एक दिन द्रौपदीके भोजन कर लेनेपर असमयमें दुर्वासा ऋषिने शिष्योंसहित आकर भोजन माँगा] तब वनवासिनी द्रौपदीने भोजन देना स्वीकार कर अपने अन्तःकरणमें स्थित श्रीश्यामसुन्दरको ‘हे गोविन्द ! हे दामोदर ! हे माधव !’ कहकर बुलाया ।

(४९)

योगी भी जिन्हें ठीक-ठीक नहीं जान पाते, जो सभी प्रकारकी चिन्ताओंको हरनेवाले और मनोवाञ्छित वस्तुओंको देनेके लिये कल्पवृक्षके समान हैं तथा जिनके शरीरका वर्ण कस्तूरीके समान नीला है उन्हें सदा ही ‘गोविन्द ! दामोदर ! माधव !’ इन नामोंसे स्मरण करना चाहिये ।

[२१]

गोविन्द-दामोदर-स्तोत्र

(५०)

संसारकूपे पतितोऽत्यगाधे
मोहान्धपूर्णे विषयाभितप्ते ।
करावलम्बं मम देहि विष्णो
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(५१)

त्वामेव याचे मम देहि जिह्वे
समागते दण्डधरे कृतान्ते ।
वक्तव्यमेवं मधुरं सुभक्त्या
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(५२)

भजस्व मन्त्रं भवबन्धमुक्त्यै
जिह्वे रसज्ञे सुलभं मनोज्ञम् ।
द्वैपायनाद्यैर्मुनिभिः प्रजप्तं
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(५३)

गोपाल वंशीधर रूपसिन्धो
लोकेश नारायण दीनबन्धो ।
उच्चस्वरैस्त्वं वद सर्वदैव
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(५४)

जिह्वे सदैवं भज सुन्दराणि
नामानि कृष्णस्य मनोहराणि ।
समस्तभक्तार्तिविनाशनानि
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

गोविन्द-दामोदर-स्तोत्र

(५०)

जो मोहरूपी अन्धकारसे व्याप्त और विषयोंकी ज्वालासे सन्तप्त है, ऐसे अथाह संसाररूपी कूपमें मैं पड़ा हुआ हूँ । हे मेरे मधुसूदन ! हे गोविन्द ! हे दामोदर ! हे माधव ! मुझे अपने हाथका सहारा दीजिये ।

(५१)

हे जिह्मे ! मैं तुझीसे एक भिक्षा माँगता हूँ, तू ही मुझे दे । वह यह कि जब दण्डपाणि यमराज इस शरीरका अन्त करने आवें तो बड़े ही प्रेमसे गद्गद स्वरमें 'हे गोविन्द ! हे दामोदर ! हे माधव !' इन मञ्जुल नामोंका उच्चारण करती रहना ।

(५२)

हे जिह्मे ! हे रसज्ञे ! संसाररूपी बन्धनको काटनेके लिये तू सर्वदा 'हे गोविन्द ! हे दामोदर ! हे माधव !' इस नामरूपी मन्त्रका जप किया कर, जो सुलभ एवं सुन्दर है और जिसे व्यास, वसिष्ठादि ऋषियोंने भी जपा है ।

(५३)

रे जिह्मे ! तू निरन्तर 'गोपाल ! वंशीधर ! रूपसिन्धो ! लोकेश ! नारायण ! दीनबन्धो ! गोविन्द ! दामोदर ! माधव !' इन नामोंका उच्च स्वरसे कीर्तन किया कर ।

(५४)

हे जिह्मे ! तू सदा ही श्रीकृष्णचन्द्रके 'गोविन्द ! दामोदर ! माधव ! इन मनोहर मञ्जुल नामोंको, जो भक्तोंके समस्त सङ्कटोंकी निवृत्ति करनेवाले हैं, मजती रह ।

गोविन्द-दामोदर-स्तोत्र

(५५)

गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे
गोविन्द गोविन्द मुकुन्द कृष्ण ।
गोविन्द गोविन्द रथाङ्गपाणे
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(५६)

सुखावसाने त्विदमेव सारं
दुःखावसाने त्विदमेव गेयम् ।
देहावसाने त्विदमेव जाप्यं
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(५७)

दुर्वारवाक्यं परिगृह्य कृष्णा
मृगीव भीता तु कथं कथञ्चित् ।
सभां प्रविष्टा मनसाजुहाव
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(५८)

श्रीकृष्ण राधावर गोकुलेश
गोपाल गोवर्धन नाथ विष्णो ।
जिह्वे पिवस्वामृतमेतदेव
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(५९)

श्रीनाथ विश्वेश्वर विश्वमूर्ते
श्रीदेवकीनन्दन दैत्यशत्रो ।
जिह्वे पिवस्वामृतमेतदेव
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

गोविन्द-दामोदर-स्तोत्र

(५५)

हे जिह्वे ! 'गोविन्द ! गोविन्द ! हरे ! मुरारे ! गोविन्द !
गोविन्द ! मुकुन्द ! कृष्ण ! गोविन्द ! गोविन्द ! रथाङ्गपाणे !
गोविन्द ! दामोदर ! माधव !'—इन नामोंको तू सदा जपती रह ।

(५६)

सुखके अन्तमें यही सार है, दुःख [की निवृत्तिके लिये] यही [कीर्तन
करने] योग्य है और शरीरका अन्त होनेके समय भी यही मन्त्र जपने योग्य
है, कौन-सा मन्त्र ? यही कि 'हे गोविन्द ! हे दामोदर ! हे माधव !'

(५७)

दुःशासनके दुर्निवार्य वचनोंको स्वीकारकर मृगीके समान
भयभीत हुई द्रौपदी किसी-किसी तरह सभामें प्रवेशकर मन-ही-मन
'गोविन्द ! दामोदर ! माधव !' इस प्रकार भगवान्‌का स्मरण
करने लगी ।

(५८)

हे जिह्वे ! तू श्रीकृष्ण ! राधारमण ! ब्रजराज ! गोपाल !
गोवर्धन ! विष्णो ! गोविन्द ! दामोदर ! माधव ! इस नामामृतका
निरन्तर पान करती रह ।

(५९)

हे जिह्वे ! तू श्रीनाथ ! सर्वेश्वर ! श्रीविष्णुस्वरूप ! श्रीदेवकी-
नन्दन ! असुरनिकन्दन ! गोविन्द ! दामोदर ! माधव ! इस नामामृत-
का निरन्तर पान करती रह ।

गोविन्द-दामोदर-स्तोत्र

(६०)

गोपीपते कंसरिपो मुकुन्द
लक्ष्मीपते केशव वासुदेव ।
जिह्वे पिवस्वामृतमेतदेव
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(६१)

गोपीजनाह्लादकर व्रजेश
गोचारणारण्यकृतप्रवेश ।
जिह्वे पिवस्वामृतमेतदेव
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(६२)

प्राणेश विश्वम्भर कैटभारे
वैकुण्ठ नारायण चक्रपाणे ।
जिह्वे पिवस्वामृतमेतदेव
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(६३)

हरे मुरारे मधुसूदनाद्य
श्रीराम सीतावर रावणारे ।
जिह्वे पिवस्वामृतमेतदेव
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(६४)

श्रीयादवेन्द्राद्रिघराम्बुजाक्ष
गोगोपगोपीसुखदानदक्ष ।
जिह्वे पिवस्वामृतमेतदेव
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(६०)

हे जिह्वे ! तू 'गोपीपते ! कंसरिपो ! मुकुन्द ! लक्ष्मीपते !
केशव ! वासुदेव ! गोविन्द ! दामोदर ! माधव !'—इस नामामृतका
निरन्तर पान करती रह ।

(६१)

जो ब्रजराज ब्रजाङ्गनाओंको आनन्दित करनेवाले हैं, जिन्होंने
गौओंको चरानेके लिये वनमें प्रवेश किया है; हे जिह्वे ! तू उन्हीं
मुरारिके 'गोविन्द ! दामोदर ! माधव !'—इस नामामृतका निरन्तर
पान करती रह ।

(६२)

हे जिह्वे ! तू 'प्राणेश ! विश्वम्भर ! कैटभारे ! वैकुण्ठ !
नारायण ! चक्रपाणे गोविन्द ! दामोदर ! माधव !'—इस
नामामृतका निरन्तर पान करती रह ।

(६३)

'हे हरे ! हे मुरारे ! हे मधुसूदन ! हे पुराणपुरुषोत्तम ! हे
रावणारे ! हे सीतापते श्रीराम ! हे गोविन्द ! हे दामोदर ! हे माधव !'
—इस नामामृतका हे जिह्वे ! तू निरन्तर पान करती रह ।

(६४)

हे जिह्वे ! तू 'श्रीयदुकुलनाथ ! गिरिघर ! कमलनयन ! गौ,
गोप और गोपियोंको सुख देनेमें कुशल ! श्रीगोविन्द ! दामोदर !
माधव !'—इस नामामृतका निरन्तर पान करती रह ।

गोविन्द-दामोदर-स्तोत्र

(६५)

धराभरोत्तारणगोपवेष
 विहारलीलाकृतबन्धुशेष ।
 जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव
 गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(६६)

बकीबकासुरधेनुकारे
 केशीतृणावर्तविघातदक्ष ।
 जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव
 गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(६७)

श्रीजानकीजीवन रामचन्द्र
 निशाचरारे भरताग्रजेश ।
 जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव
 गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(६८)

नारायणानन्त हरे नृसिंह
 प्रह्लादबाधाहर हे कृपालो ।
 जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव
 गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(६९)

लीलामनुष्याकृतिरामरूप
 प्रतापदासीकृतसर्वभूष ।
 जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव
 गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

गोविन्द-दामोदर-स्तोत्र

(६५)

जिन्होंने पृथ्वीका भार उतारनेके लिये सुन्दर ग्वालका रूप धारण किया है और आनन्दमयी लीला करनेके निमित्त ही शेषजीको अपना भाई बनाया है, ऐसे उन नटनागरके 'गोविन्द ! दामोदर ! माधव !'—इस नामामृतका हे जिह्मे ! तू निरन्तर पान करती रह ।

(६६)

जो पूतना, बकासुर, अघासुर और धेनुकासुर आदि राक्षसोंके शत्रु हैं और केशी तथा वृणावर्तको पछाड़नेवाले हैं, हे जिह्मे ! उन असुरारि मुरारिके 'गोविन्द ! दामोदर ! माधव !'—इस नामामृतका तू निरन्तर पान करती रह ।

(६७)

हे जानकीजीवन भगवान् राम ! हे दैत्यदलन भरताग्रज ! हे ईश ! हे गोविन्द ! हे दामोदर ! हे माधव !—इस नामामृतका हे जिह्मे ! तू निरन्तर पान करती रह ।

(६८)

हे प्रह्लादकी बाधा हरनेवाले दयामय 'नृसिंह ! नारायण ! अनन्त ! हरे ! गोविन्द ! दामोदर ! माधव !—इस नामामृतका हे जिह्मे ! तू निरन्तर पान करती रह ।

(६९)

हे जिह्मे ! जिन्होंने लीलाहीसे मनुष्योंकी-सी आकृति बनाकर, रामरूप प्रकट किया है और अपने प्रबल पराक्रमसे सभी भूषोंको दास बना लिया है, तू उन नीलम्बुज श्यामसुन्दर श्रीरामके 'गोविन्द ! दामोदर ! माधव !'—इस नामामृतका ही निरन्तर पान करती रह ।

गोविन्द-दामोदर-स्तोत्र

(७०)

श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे
हे नाथ नारायण वासुदेव ।
जिह्वे पिवस्वामृतमेतदेव
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

(७१)

वक्तुं समर्थोऽपि न वक्ति कश्चि-
दहो जनानां व्यसनाभिमुख्यम् ।
जिह्वे पिवस्वामृतमेतदेव
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

इति श्रीबिह्वमङ्गलाचार्य*विरचितं श्रीगोविन्ददामोदरस्तोत्रं
सम्पूर्णम् ।



* उपनाम 'श्रीमधुमङ्गलाचार्य' ।

गोविन्द-दामोदर-स्तोत्र

(७०)

हे जिह्वे ! तू 'श्रीकृष्ण ! गोविन्द ! हरे ! मुरारे ! हे नाथ !
नारायण ! वासुदेव ! तथा गोविन्द ! दामोदर ! माधव !'—इस
नामामृतका ही निरन्तर प्रेमपूर्वक पान करती रह ।

(७१)

अहो ! मनुष्योंकी विषयलोलुपता कैसी आश्चर्यजनक है ! कोई-
कोई तो बोलनेमें समर्थ होनेपर भी भगवन्नामका उच्चारण नहीं करते;
किन्तु हे जिह्वे ! मैं तुझसे कहता हूँ, तू 'गोविन्द ! दामोदर ! माधव !'
—इस नामामृतका ही निरन्तर प्रेमपूर्वक पान करती रह ।

इस प्रकार यह श्रीविव्मङ्गलाचार्यका बनाया हुआ गोविन्द-दामोदर-
स्तोत्र समाप्त हुआ ।



मुद्रक-प्रकाशक—धनश्यामदास जालान, गीताप्रेस, गोरखपुर

(36)

1870-1871 : 93 : 76 : 1870 : 1871 ..

१५-१६ ! २३ ! २४ ! २५ ! २६ ! २७ !

1700 年 1 月 1 日

(٧٥)

சென்னை : சென்னை மாநகராட்சி நிர்வாகம்

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

1871 1872 1873 1874 1875 1876 1877 1878 1879 1880 1881 1882 1883 1884 1885 1886 1887 1888 1889 1890 1891 1892 1893 1894 1895 1896 1897 1898 1899 1900 1901 1902 1903 1904 1905 1906 1907 1908 1909 1910 1911 1912 1913 1914 1915 1916 1917 1918 1919 1920 1921 1922 1923 1924 1925 1926 1927 1928 1929 1930 1931 1932 1933 1934 1935 1936 1937 1938 1939 1940 1941 1942 1943 1944 1945 1946 1947 1948 1949 1950 1951 1952 1953 1954 1955 1956 1957 1958 1959 1960 1961 1962 1963 1964 1965 1966 1967 1968 1969 1970 1971 1972 1973 1974 1975 1976 1977 1978 1979 1980 1981 1982 1983 1984 1985 1986 1987 1988 1989 1990 1991 1992 1993 1994 1995 1996 1997 1998 1999 2000 2001 2002 2003 2004 2005 2006 2007 2008 2009 2010 2011 2012 2013 2014 2015 2016 2017 2018 2019 2020 2021 2022 2023 2024 2025 2026 2027 2028 2029 2030 2031 2032 2033 2034 2035 2036 2037 2038 2039 2040 2041 2042 2043 2044 2045 2046 2047 2048 2049 2050 2051 2052 2053 2054 2055 2056 2057 2058 2059 2060 2061 2062 2063 2064 2065 2066 2067 2068 2069 2070 2071 2072 2073 2074 2075 2076 2077 2078 2079 2080 2081 2082 2083 2084 2085 2086 2087 2088 2089 2090 2091 2092 2093 2094 2095 2096 2097 2098 2099 2100 2101 2102 2103 2104 2105 2106 2107 2108 2109 2110 2111 2112 2113 2114 2115 2116 2117 2118 2119 2120 2121 2122 2123 2124 2125 2126 2127 2128 2129 2130 2131 2132 2133 2134 2135 2136 2137 2138 2139 2140 2141 2142 2143 2144 2145 2146 2147 2148 2149 2150 2151 2152 2153 2154 2155 2156 2157 2158 2159 2160 2161 2162 2163 2164 2165 2166 2167 2168 2169 2170 2171 2172 2173 2174 2175 2176 2177 2178 2179 2180 2181 2182 2183 2184 2185 2186 2187 2188 2189 2190 2191 2192 2193 2194 2195 2196 2197 2198 2199 2200 2201 2202 2203 2204 2205 2206 2207 2208 2209 2210 2211 2212 2213 2214 2215 2216 2217 2218 2219 2220 2221 2222 2223 2224 2225 2226 2227 2228 2229 2230 2231 2232 2233 2234 2235 2236 2237 2238 2239 2240 2241 2242 2243 2244 2245 2246 2247 2248 2249 2250 2251 2252 2253 2254 2255 2256 2257 2258 2259 2260 2261 2262 2263 2264 2265 2266 2267 2268 2269 2270 2271 2272 2273 2274 2275 2276 2277 2278 2279 2280 2281 2282 2283 2284 2285 2286 2287 2288 2289 2290 2291 2292 2293 2294 2295 2296 2297 2298 2299 2300 2301 2302 2303 2304 2305 2306 2307 2308 2309 2310 2311 2312 2313 2314 2315 2316 2317 2318 2319 2320 2321 2322 2323 2324 2325 2326 2327 2328 2329 2330 2331 2332 2333 2334 2335 2336 2337 2338 2339 2340 2341 2342 2343 2344 2345 2346 2347 2348 2349 2350 2351 2352 2353 2354 2355 2356 2357 2358 2359 2360 2361 2362 2363 2364 2365 2366 2367 2368 2369 2370 2371 2372 2373 2374 2375 2376 2377 2378 2379 2380 2381 2382 2383 2384 2385 2386 2387 2388 2389 2390 2391 2392 2393 2394 2395 2396 2397 2398 2399 2400 2401 2402 2403 2404 2405 2406 2407 2408 2409 2410 2411 2412 2413 2414 2415 2416 2417 2418 2419 2420 2421 2422 2423 2424 2425 2426 2427 2428 2429 2430 2431 2432 2433 2434 2435 2436 2437 2438 2439 2440 2441 2442 2443 2444 2445 2446 2447 2448 2449 2450 2451 2452 2453 2454 2455 2456 2457 2458 2459 2460 2461 2462 2463 2464 2465 2466 2467 2468 2469 2470 2471 2472 2473 2474 2475 2476 2477 2478 2479 2480 2481 2482 2483 2484 2485 2486 2487 2488 2489 2490 2491 2492 2493 2494 2495 2496 2497 2498 2499 2500 2501 2502 2503 2504 2505 2506 2507 2508 2509 2510 2511 2512 2513 2514 2515 2516 2517 2518 2519 2520 2521 2522 2523 2524 2525 2526 2527 2528 2529 2530 2531 2532 2533 2534 2535 2536 2537 2538 2539 2540 2541 2542 2543 2544 2545 2546 2547 2548 2549 2550 2551 2552 2553 2554 2555 2556 2557 2558 2559 2560 2561 2562 2563 2564 2565 2566 2567 2568 2569 2570 2571 2572 2573 2574 2575 2576 2577 2578 2579 2580 2581 2582 2583 2584 2585 2586 2587 2588 2589 2590 2591 2592 2593 2594 2595 2596 2597 2598 2599 2600 2601 2602 2603 2604 2605 2606 2607 2608 2609 2610 2611 2612 2613 2614 2615 2616 2617 2618 2619 2620 2621 2622 2623 2624 2625 2626 2627 2628 2629 2630 2631 2632 2633 2634 2635 2636 2637 2638 2639 2640 2641 2642 2643 2644 2645 2646 2647 2648 2649 2650 2651 2652 2653 2654 2655 2656 2657 2658 2659 2660 2661 2662 2663 2664 2665 2666 2667 2668 2669 2670 2671 2672 2673 2674 2675 2676 2677 2678 2679 2680 2681 2682 2683 2684 2685 2686 2687 2688 2689

सं० १९९२ से २००३ तक ३१,२५०

सं० २००५ नवम संस्करण ५,०००

सं० २००६ दशम संस्करण १०,०००

कुल ४६,२५०

पता—गीताप्रेस, पो० गीताप्रेस (गोरखपुर)

